फजाइल आमाल कुरआन व सुन्नत की अदालत मे

मुसलमान भाईयों जिस मौजूअ पर हम यह पर्चा लिखने जा रहे है, वह इस वक्त का सबसे खास मौजू है और वह मौजू फजाइल आमाल कुरआन व हदीस की अदालत मे है । फ़ज़ाइल आमाल लिखने वाले और हमारे तबलिगी भाई जो इसको पढ़ते और सुबह व शाम इसका दर्स देते रहते हैं, और भोले भाले लोगो को इसके चुंगल मे फंसाते है कि यह अल्लाह व रसुल का रास्ता है इस किताब मे कितने भयानक और खतरनाक अकाईद और शिर्किया बाते मौजूद है और इसके अलावा बहुत सारी चीजें मनघड़त किस्से, कहांनियां, झूठी हदीसें है ।

इस पर्चे को लिखने का मकसद किसी जमाअत, किसी फिरके, किसी गिरोह को बुरा कहना नहीं है, बल्कि हमारा मकसद भोले भाले लोग जो सच मे अल्लाह से और उसके रसुल सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम से मुहब्बत करते है और सिर्फ उनकी ही पैरवी करना चाहते है उनकी इस्लाह करना है । हमारे मुसलमान भाई अंधेरा से निकलकर कुरआन हदीस की रोशनी की तरफ आए और कुरआन व सुन्नत को अपना मनहज–ए–अमल बना ले । अल्लाह और उसके रसूल सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम के फरमान से ही यह मुसलमान सुधर सकते है । चुनांचे अल्लाह रब्बुल इज्जत फरमाता है :–

कह दीजिए कि अल्लाह तआला और उसके रसूल की इताअत करो । अगर यह मूंह फेर ले तो बेशक अल्लाह तआला काफिरो को दोस्त नहीं रखता । (सुरा आले इमरान आयत नं0 32)

और यह हम और आप सब अच्छी तरह जानते हैं कि ईमान के अंदर इस्लाम के अंदर कुछ बाते ऐसी है जो दो टूक है, दो लफ्जो मे है । अगर कोई इंसान इन दो लफ्जो के ऊपर या वो जो दो टूक ईमान और अकीदे के अलफाज है, उसका इंकार कर दे, उन पर ईमान ल लाए तो नेकियां, नमाज, रोजे, जकात, हज, सदके, खैरात, मेहनतें कितनी भी हो, वो दो लफ्जों के मजमुए का अगर वोह इंकार कर दे, तमाम चीजों पर ईमान रखता है लेकिन किसी एक या दो अकीदे का इंकार कर दे तो उसके नमाज उसके जकात हज रोजे सारे के सारे बर्बाद है । अल्लाह तआला के यहां इनकी कोई अहमीयत नहीं ।

अकीदा क्या है

ऐ ईमान वालो ईमान लाओ, अल्लाह पर और उसके रसूल पर और इस किताब (कुरआन) पर जो अल्लाह ने अपने रसूल सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम पर उतारी है और उस किताब पर जो इससे पहले नाजिल हो चुका है । जिसने अल्लाह और उसके फरिश्तो और उसकी किताबों और उसके रसूलों और रोजे आखिरत से कुफर किया, वह गुमराही मे भटक कर बहुत दूर निकल गया । (सुरा निसा, आयत 136)

कुरआन हदीस का अकीदा कि दीन इस्लाम मुकम्मल (पूरा) है

अल्लाह तआला का इस उम्मत पर सबसे बड़ा अहसान यह है कि उसने दीन मुकममल कर दिया। अब किसी दूसरे दीन या नबी और ईमाम की जरूरत नहीं। इसीलिए आप सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम आखिरी नबी और आखिरी ईमाम है। आप सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम आदम अलैहिस्सलाम से लेकर ईसा अलैहिस्सलाम तक सब पैगम्बरों के ईमाम है।

आज मैने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन मुकम्मल कर दिया और तुम पर अपनी नेमते पूरी कर दी और पसंद फरमाया इस्लाम को तुम्हारे लिए दीन के एतबार से (सुरा माईदा आयत 3)

जो शख्स इस्लाम के सिवा और दीन तलाश करें, उसका दीन कबूल नहीं किया जायेगा और वोह आखरत मे नुकसान पाने वालों मे से होगा। (सूरा आले ईमरान आयत 85)

फजाइल आमाल का अकीदा आसमान से परचा गिरा

हजरत जूवाननून मिसरी फरमाते हैं कि मैंने एक नौजवान को काबा शरीफ के पास देखा कि दमादम सज्दे कर रहा है। मैंने पूछा कि बड़ी कसरत से नमाजे पढ़ रहे हो वह कहने लगा वापसी वतन की इजाजत मांग रहा हू इतने में मैने देखा कि एक कागज का परचा गिरा। उसमे लिखा हुआ था कि यह अल्लाह जल्ल शानहु जो बड़ी इज्जत वाला, बड़ी मगफिरत वाला है, की तरफ से अपने सच्चे शुक्र गुजार बन्दे की तरफ है कि तू वापिस चला जा। इस तरह की तेरे अगले पिछले सब गुनाह बख्श दिये गये। (फजाइल हज्ज, किस्सा 15, सफा 232)

ऐसे अकीदे के लिए कुरआन का फैसला

1. **फरमाने इलाही और उससे बढ़कर जालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ बांधे। (सूरा हूद, आयत 18)**

2. **सो उस शख्स से ज्यादा कौन जालिम होगा, जो अललाह पर झूठ बांधे या उसकी आयतों को झूठा बताए। यकीकनन ऐसे मुजरिमों को असलन कामयाबी नहीं होगी। (सूरा युनूस, आयत 17)**

कुरआन हदीस का अकीदा अल्लाह तआला के सिवा कोई भी गैब नहीं जानता

गैब के लुगवी मानी है अन देखा इसमे वह तमाम चीजें दाखिल है, जिसका ख्याल इस दुनिया मे न अकल से हो सकता है न हवास से । जैसे अल्लाह तआला की जात, फरिश्ते, मौत के बाद की जिन्दगी वगैरह ।

बेशक कयामत का इल्म अल्लाह ही के पास है, वहीं बारिश कराता है, और जानता जो कुछ मांओ के पेटो मे है, और कोई नहीं जानता कि कल वह क्या करेगा और नही ये कि किस जगह उसकी मौत होगी । बेशक अल्लाह जाननेवाला खबर रखनेवाला है ।(सुरा लुकमान आयत नं0 34)

इस आयत मे अल्लाह साफ कह रहा है कि 5 चीजों का इल्म गैब अल्लाह के पास है

फजाइले आमाल का अकीदा बुजूर्ग भी गैब जानते है

(1) अबुल हसन मालकी कहते हैं कि मै खैर नूर बाफ के साथ कई साल रहा । उन्होने अपने इंतेकाल से आठ दिन पहले कहा कि मैं जुमेरात की शाम को मगरीब के वक्त मरूंगा और जुमे की नमाज के बाद दफन किया जाऊंगा, भूल न जाना । लेकिन मैं बिल्कुल भूल गया । जुमे की सुबह एक शख्स ने मुझे इंतेकाल की खबर सुनाई । मैं फौरान गया कि जनाजे मे शिरकत करूं । रास्ते मे लोग मिले जो उनके घर से वापिस आ रहे थै और यह कह रहे कि जुमा के बाद दफन होंगे । मगर उनके घर पहुंच गया । मैंने वहां जाकर उनके इंतेकाल की कैफियत पूछी तो मुझसे एक शख्स ने जो इंतेकाल के वक्त उनके पास मौजूद था । बताया कि रात मगरिब की नमाज के करीब उनको गशी से हुई उसके बाद जरा इफाका सा हुआ तो धर के एक कोने की तरफ मूंह करके कहने लगे कि थोड़ी देर ठहर जाओं, तुम्हें भी एक काम का हुकूम है और मुझे भी एक काम का हुकम है । (फजाइले सदकात सफा 485)

(देखा आपने ये साहब को अपने मरने और दफन होने का पता 8 दिन पहले ही चल गया)

(2) शेख अबू यजीद कुरबती फरमाते हैं कि मैंने यह सुना (किससने सुना मालूम नहीं) कि जो शख्स सत्तर हजार मरतबा ला इलाहा इल्लल्लाहू पढ़े उसको दोजख की आग से निजात मिले । मैंने यह खबर सुनकर एक निसाब, यानी सत्तर हजार की तादाद अपनी बीवी के लिए भी पढ़ा और कई निसाब खुद अपने लिए पढ़कर जखीरा आखिरत बनाया । हमारे पास एक नौजवान रहता था, जिसके मुताल्लिक यह मशहूर था कि यह साहिब कशफ है । जन्नत दोजख का भी इसको कशफ होता है (यानी जन्नत और जहन्नम में क्या हो रहा है, इस नौजवान को मालूम है) मुझको इसकी सेहत मे कुछ तरद्दूद था । एक मरतबा वह नौजवान हमारे साथ खाने मे शरीक था कि अचानक उसने एक

चीख मारी और सांस फूलने लगा और कहा मेरी मां दोजख मे जल रहीं है, इसकी हालत मुझे नजर आई । कुरतबी कहते हैं कि मैं इसकी घबराहट देख रहा था । मुझे ख्याल आया कि एक निसाब उसकी मां को बख्श दूं, जिससे उसकी सच्चाई का भी मुझे तजुर्बा हो जायेगा । चुनांचे मैंने एक निसाब सत्तर हजार का उन निसाब में से जो अपने लिए पढ़े थे, उसकी मां को बख्श दिया । मैंने अपने दिल मे चुपके ही से बख्शा था और मेरे इस पढ़ने की खबर भी अल्लाह के सिवा किसी को मालूम न थी । मगर वह नौजवान फौरन कहने लगा, चचा मेरी मां दोजख के अजाब से हटा दी गई । (फजाइल जिक्र हिन्दी सफा 132, फजाइले जिक्र उर्दू सफा 83)

(देखा आपने नौजवान को सब मालूम है अभी आखिरत कायम हुई नहीं उसकी मां जन्न्त दोजख मे घुम रहीं है और आलमे बर्जख कहां गया, और बख्शने बख्शाने का सिलसिला भी सीख लीजिए जबकि आज तक किसी सहाबी रदि0 ने एक आयत भी किसी को नहीं बख्शी)

उसके बढ़कर जालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ बांधे (सूरा हूद, आयत 18)

कुरआन का हुक्म हर चीज अल्लाह से मांगो, कब्र वाले सुना नहीं करते

लोगो तुम पर जो ईनाम अल्लाह तआला ने किये है, उन्हें याद करों । क्या अल्लाह के सिवा और कोई भी खालिक (पैदा करने वाला) है जो तुम्हे आसमान से रोजी पहुंचाये । उसके सिवा कोई माबूद नहीं । पस तुम कहां उलटे जाते हो । (सुरा फातिर आयत 3)

जिन्हे तुम उसके (अल्लाह) के सिवा पुकार रहे हो, वह तो खजूर की गुठली के छिलके के भी मालिक नहीं ।(सुरा फातिर आयत 13)

अगर तुम उन्हे पुकारो तो वे तुम्हारी पुकार सुनेगे नहीं । और अगर वे सुनते भी तो तुम्हारी पुकार कुबूल नहीं करते और कयामत के दिन तुम्हारे शरीक ठहराने का इंकार कर देगें । पूरी खबर रखने वाला अल्लाह की तरह तुम्हे कोई न बताएगा । (सुरा फातिर आयत 14)

फजाइले आमाल का इंकार

(1) इब्राहिम शयबान कहते है कि हज से फारिग होकर मदीना मुनव्वरा हाजिर हुआ और मैंने कब्र शरीफ के पास जाकर सलाम अर्ज किया । तो मैंने हुजरे शरीफ के अंदर से वआलैइका सलाम की आवाज सुनी । (फजाइल दरूद शरीफ हिन्दी सफा 54)

(देखा आपने इतना बड़ा दावा किसी सहाबी रदि0 ने भी नहीं किया)

(2) सैय्यद अहमद रिफाई मशहूर बुजुर्ग अकाबिर सुफिया में से है । उनका किस्सा मशहूर है कि जब 555 हिजरी में वह जियारत के लिए हाजिर हुए और कब्र अतहर के करीब खड़े होकर दो शअर पढ़े तो दस्त मुबारक बाहर निकला और उन्होने उसको चुमा । (फजाइले दरूद हिन्दी सफा 163)

(3) बुजुर्ग फरमाते है कि एक रोज मुझे बहुत भूख लगी (ना मालूम कई दिन का फाका होगा) मैंने अल्लाह जल्ल0शाहनहू से दुआ कि तो मैने देखा कि नबी सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम की रूह मुकद्दस आसमान से उतरी और हुजूर अकदस सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम के हाथ मे एक रोटी थी । गोया अल्लाह जल्ल0शाहनहू ने हुजूर सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम को इरशाद फरमाया था कि रोटी मुझे मरहमत फरमाए (फजाइले दरूद हिन्दी किस्सा 12 सफा 155)

(देखा साहब खिलवाड़, क्या जवाब दोगे अल्लाह को सोचो मजाक बनाया हुआ है तुमने रसुले अकरम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम का)

(4) कि मेरे वालिद ने मुझे बताया कि वह एक दफा बीमार हुए तो ख्वाब मे नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया मेरे बेटे कैसी तबीअत है । इसके बाद शिफा की बशारत (खुश खबरी) अता फरमाई और अपनी दाढ़ी मुबारक मे से दो बाल मरहमत फरमाए । मुझे उसी वक्त सेहत हो गई और जब आंख खुली तो वह दोनो बाल मेरे हाथ मे थे । (फजाइले दरूद हिन्दी किस्सा 15 सफा 155)

(अल्लाह इन पर रहम न करे और रसुल सल्लाल्लाहू के गुस्ताख को पकड़े)

(5) सूफी अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अबी जरआ फरमाते हैं कि मैं अपने वालिद अबू अब्दुल्लाह बिन खफीफ के साथ मक्का मुकर्रमा में हाजिर हुआ । बड़ी सख्त तंगी थी । फाका बहुत सख्त हो गया था इसी हालत मे हम मदीना तय्यब हाजिर हुए और खाली पेट ही रात गुजारी । मैं उस वक्त तक नाबालिग था । बार बार वालिद के पास जाता और जाकर भूख की शिकायत करता । मेरे वालिद उठ कर कब्र शरीफ के करीब हाजिर हुए और अर्ज किया या रसूल अल्लाह सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम मैं आपका मेहमान हूं । ये अर्ज करके वहीं मुराकबे में बैठ गया । (मुराकबा यानी घुटनों मे सर रख कर बैठना) । थोड़ी देर बाद मुराकबे से सर उठाया और सर उठाने के बाद कभी रोने लगते, कभी हंसने लगते । किसी ने इसका सबब पूछा तो कहने लगे कि मैंने हुजूर अकदस सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम की जियारत की (यानी देखा) आप सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम ने मेरे हाथ मे चंद दरहम रख दिये । हाथ खोला तो इसमे दरहम रखे हुए थे । सूफी जी कहते हैं कि हम तआला शाहनहू ने इनमे इतनी बरकत फरमाई कि हमने शिराज लौटने तक इसी मे से खर्च किया । (फजाइले हज्ज किस्सा 23 सफा 170)

(अल्लाह तू गवाह रह, जबकि तेरे रसुल सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम ने कहा था कि जब तक मक्का जाने की ताकत न हो हज न करो, और एक साहबी को एक बार फाका हुआ तो आपने उसके घर का

सामान बेच कर उसे एक कुल्हाड़ी दिलाई जिसकी लकड़ी आपने अपने हाथ से लगाई और कहा जंगल से लकड़ी काट कर अपना पेट भरो मगर भीख नहीं दी, मगर वाह रे देवबंद वाह, अल्लाह को जवाब नहीं दोगे क्या, यहीं वह किताब है जो कुरआन के बाद सबसे सच्ची है)

हदीस :-

रसुल अल्लाह सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फरमाया जिसने जानबूझ कर झूठ मेरी जानिब मनसूब किया वह अपना ठिकाना जहन्नम मे बना ले । (बुखारी मुस्लिम)

वसीला कुरआन के नजदीक

जब मेरे बंदे मेरे बारे मे आपसे सवाल करें (यानी अललाह करीब है या दूर) तो आप कह दें कि मैं बहुत ही करीब हूं । पुकारने वाले की पुकार को, जब कभी वह मुझे पुकारे कबूल करता हूं । इसलिए लोगों को भी चाहिए कि वह मेरी बात मान लिया करें और मुझ पर ईमान रखे । यही उनकी भलाई का बाइस हैं । (सुरा बकरा आयत 186)

तुम्हारे परवरदिगार ने फरमाया (सिर्फ) मुझसे दुआ करों । मैं तुम्हारी दुआ कबूल करूंगा । जो लोग धमण्ड मे आकर मेरी इबादत से मूंह मोड़ते है, वो जल्द ही जलील व ख्वार होकर जहन्नम मे दाखिल होगे । (सूरा मुमिन आयत 60)

कौन है जो बेकरार व लाचार की दुआ सुनता है, जबकि वह उसे पुकारे और कौन उसकी तकलीफ दूर करता है (और कौन है जो) तुम्हे जमीन का खलीफा बनाता है । क्या अल्लाह के साथ कोई और इलाह भी है तुम लोग कम ही नसीहत हासिल करते हो । (सुरा नमल आयत 62)

जाइज वसीला

1. जिन्दा नेक इंसान का
2. जो कोई काम जिन्दगी मे सिर्फ अल्लाह तआला के लिए किया हो । जब कोई मुसीबत आए तो उस नेक काम को वसीला बनाना जाइज है ।
3. अल्लाह तआला के अच्छे अच्छे नामों का वसीला जाइज है । (आराफ 180)

फजाइल आमाल के नजदीक वसीला

जब आदम से गुनाह सरजद हो गया तो उन्होने आसमान की तरफ सर उठाकर मुहम्मद सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम के वसीले से मगफिरत की दुआ मांगी । अल्लाह तआला ने पूछा मुहम्मद कौन है आदम

अलैहिस्सलाम ने जवाब दिया कि जब तूने मुझे पैदा किया तो मैने सर उठा कर अर्श की तरफ देखा और वहां ला इलाहा इल्लल्लाहू मुहम्मदुर रसूलुल्लाह लिखा हुआ पाया । तो मै समझ गया कि जिसका नाम तुने अपने नाम के साथ रखा है, उससे ज्यादा अजमत वाला कोई नाम नहीं हो सकता । अल्लाह तआला ने कहा ऐ आदम तूने सच कहा वह नबी आखिरी है और तुम्हारी औलाद मे से होंगे । अगर वह न होते तो तुम भी पैदा न किये जाते ।

एक दुसरी जगह यू है लव लाका खलकतुलअमलाका कि ऐ नबी सल्ल0 अगर आप नहीं होते तो मैं दुनिया को पैदा ना करता । (फजाइल जिक्र हिन्दी सफा 248, उर्दू सफा 94)

कुरआन का फैसला

पस सीख लिये आदम ने अपने रब से चन्द बाते और अल्लाह तआला ने उनकी तौबा कबूल फरमाई बेशक वही तौब कबूल करने वाला और रहम करने वाला है । (सूरा बकरा आयत 37)

(आदम अलैहिस्सलाम और हव्वा ने) कहा ऐ हमारे रब हमने अपनी जानों पर जुल्म किया और अगर तू हमको ना बख्शे और हम पर रहम ना करें तो हम जरूर तबाह हो जायेंगे । (सूरा आराफ आयत 23)

मैंने नहीं पैदा किया जिन्न व इंसान को मगर अपनी इबादत के लिए (सूरा जारियात आयत 56)

(देखा भाईयो अल्लाह फरमाता है कि वह कलमात आदम ने अल्लाह से सीखे, फजाइले आमाल कहती है वसीला मांगा मुहम्मद सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम के नाम का, और अल्लाह फरमाता है कि हमने दुनिया मे जिन और इंसान पैदा किये अपनी इबादत को, फजाइल आमाल कहती है आदम पैदा न होते अगर मुहम्मद सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम को पैदा न करना होता, अल्लाह की पकड़ इन पर मजबूत हो ये नेस्तेनाबूद हो जाये)

मौत के सिलसिल मे कुरआन व हदीस का अकीदा

(1) और अंधा और आंखो वाला बराबर नहीं और ना अंधेरा और रोशनी और न छांव और ना धूप, और जिन्दे और मुर्दे बराबर नहीं हो सकते । अल्लाह तआला जिसको चाहता है, सुनवा देता है, और आप उन लोगों को नहीं सुना सकते जो कब्रो मे है । (सूरा फातिर, आयत 19-22)

(2) बेशक आप मुर्दो को नहीं सुना सकते और ना बहरों को आवाज सुना सकते है जबकि वह पीठ फेर कर मुड़ गये हों । (सुरा रूम, आयत 52)

(3) आप कह दीजिए कि जितने लोग आसमानों और जमीन मे हैं,किसी को भी गैब का इल्म नहीं, सिवाय अल्लाह के और उनको यह भी खबर नहीं के वह कब जी कर कब्रो से उठेंगे । (सूरा नमल आयत 65)

(4) और वो दूसरी हस्तियां जिन्हे अल्लाह को छोड़कर लोग पुकारते है, वो किसी चीज के भी खालिक (पैदा करने वाले) नहीं है, बल्कि खुद मखलूक (पैदा किये हुए) है । मुर्दा है न कि जिन्दा और उन्हें कुछ मालूम नहीं कि उन्हे कब उठाया जायेगा । (सूरा नहल, आयत 20–21)

मगर फजाइल आमाल के बुजुर्ग मरने के बाद हंस सकते है ।

(1) मरने के बाद बुजुर्ग हंसने लगे :– शेख इब्ने अलजला मशहूर बुजुर्ग है । वह फरमाते है कि जब मेरे वालिद का इन्तेकाल हुआ और उनको नहलाने के लिए तख्ते पर रखा तो हंसने लगे । नहलाने वाले छोड़ कर चल दिये । किसी को हिम्मत उनको नहलाने की न पड़ती थी । एक और बुजुर्ग उनके रफीक आये । उन्होंने गुस्ल दिया । (फजाइल सदकात, सफा 478)

(देखा आपने मरने के बाद हंस रहे है ये बुजुर्ग और पता नहीं किस पर हंस रहे है, और क्यो हंस रहे है, और उनका नाम पता भी नहीं है कि है कौन जनाब)

(2) मरने के बाद बुजुर्ग ने अंगूठा पकड़ लिया :– एक बुजुर्ग कहते हैं कि मैंने एक मुरीद को गुस्ल दिया । उसने मेरा अंगूठा पकड़ लिया । मैंने कहा, मेरा अंगूठा छोड़ दे । मुझे मालूम है कि तू मरा नहीं । यह एक मकान है, दूसरे मकान मे इन्तकाल है । उसने मेरा अंगूठा छोड़ दिया । (फजाइल सदकात, सफा 478)

(अब इन को देखिये साहब ये जनाब ने नहलाने वाले का अंगूठा ही पकड़ लिया जैसा अकसर बच्चे करते है जब उनकी अम्मी उनको नहलाती है तो नहीं नहाने के लिए कही हाथ पकड़ लेते है या कभी उठकर भाग जाते है अल्लाह का शुक्र है ये बुजुर्ग उठ कर भागे नहीं)

(3) मरने के बाद एक बुजुर्ग ने आंखे खोल दी :– अबू सईद खजार कहते हैं कि मैं एक मरतबा मक्का मुकर्रमा मे था । बाब बनी शैबा से निकल रहा था । दरवाजे से बाहर मैंने एक निहायत खुबसूरत आदमी को मरे हुए पड़ा देखा । मैं जो उसको गौर से देखने लगा तो वोह मेरी तरफ देखकर हंसने लगा और कहने लगा अबू सईद तुम्हें मालूम नहीं कि मुहब्बत वाले दोस्त मरा नहीं करते । एक आलम से दूसरे आलम मे मुनतकिल हो जाते है ।(फजाइल सदकात, सफा 485)

(देखा आपने एक बात समझ नहीं आती कि ये बुजुर्ग मरने के बाद हंसते क्यो है ।)

क़ज़ा नमाजों के बारे मे कुरआन व हदीस का अकीदा

(1) हज़रत अनस रजि0 रिवायत करते हुए कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फरमाया जो शख्स नमाज को भूल जाये तो जिस वक्त याद आये पढ़ ले, नहीं उसका बदल मगर यह (नमाज ही) । (सहीह बुखारी)

(2) हज़रत नाफे बिन जुबैर रजि0 से रिवायत है कि उन्होने अपने बाप से सुना कि रसूल अल्लाह सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम ने एक सफर में फरमाया देखो आज रात कौन हमारी हिफाजत करेगा । ऐसा ना हो कि हम फजर की नमाज मे जाग ना सकें । हजरत बिलाल रजि0 ने कहा कि मैं ख्याल रखूंगा । फिर उन्होने पूरब की तरफ मूंह किया । लेकिन अपने कान बंद कर दिये (यानी बेखबर हो गये) । जब सूरज गरम हुआ तो जागे और खड़े हुए । रसुल अल्लाह सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम और सहाबा भी जागे । आप सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि बिलाल तुमने क्या वादा किया था । हजरत बिलाल रजि0 ने फरमाया ऐ अल्लाह के रसुल सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम जिस जात ने आपको सुलाया उसी ने मुझे भी सुला दिया ! तब आप सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फरमाया ऊंट की नकेल पकड़ कर चलो, क्योंकि यहां शैतान की जगह है । फिर (नई जगह पहुंच कर) रसूल अल्लाह सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फरमाया वजू करो और हजरत बिलाल रजि0 ने अजान दी । आपने दो रकअत नमाज पढ़ी और सब लोगो ने दो रकअते (दो सुन्नत) पढ़ी । फिर फजर की नमाज पढ़ी और जो शख्स नमाज भूल जाए, उसे जब याद आये तो नमाज पढ़ ले । (सहीह बुखारी)

(3) हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजि0 से रिवायत है कि हम रसूल अल्लाह सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम के साथ जंग अहजाब मे थे । तो हम लोग जुहर, असर, मगरबि और ईशा की नमाजें पढ़ने से रोक दिये गये (यानि काफिरो ने हमे नमाजें पढ़ने का मौंका न दिया और नमाजों का वक्त निकल गया) । मेरे दिल पर (इन नमाजों का छुटना) बहुत भारी मालूम हुआ । लेकिन मैने अपने मन ही मे कहा कि हम तो रसूल अल्लाह सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम के साथ हैं और अल्लाह की राह में है (फिर जब मौका मिला तो) रसूल सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम ने हजरत बिलाल रजि0 को हुक्म दिया और उन्होने अकामत कही और आपने जोहर की नमाज पढ़ाई । फिर उन्होने अकामत कही और आपने असर की नमाज पढ़ाई, फिर उन्होने अकामत कही और आपने मगरिब की नमाज पढ़ाई फिर उन्होने अकामत कही और आपने ईशा की नमाज पढ़ाई । फिर आपने हमारी तरफ मूंह करके फरमाया । इस वक्त पूरी जमीन पर तुम्हे छोड़कर कोई जमाअत ऐसी नहीं है जो अल्लाह को याद करती हो । (नसई, सनद सहीह)

(आपने देखा यहां तीन सहीह अहादीस पेश की गई है जिसमे आप सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम का अमल और हुक्म ये है कि अगर कोई नमाज फौत हो जाये तो जब आप मौका पाये उसे पढ़ ले, इसमे किसी किस्म

की और कोई बात आपने नही फरमाई अब देखिये आगे)

फजाइल आमाल का अकीदा कजा नमाजो के बारे मे

जो नमाज कजा हो गई हो चाहे उसको बाद मे पढ़ भी ले, लेकिन इस नमाज को वक्त पर ना पढ़ने की वजह से 2 करोड़ 88 लाख बरस जहन्नम मे जलाया जाएगा ।

मौजू हदीस से दलील – हुजूर सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम से नकल किया गया है कि जो शख्स नमाज को कजा कर दे, गौ वह बाद में पढ़ भी ले । फिर भी अपने वक्त पर न पढ़ने की वजह से एक हुकब जहन्नम मे जलेगा और हुकब की मिकदार 80 बरस की होती है ।

अब यहां से साहब जकरिया का कैलकुलेशन शुरू हुआ, और एक बरस 360 दिन का और कयामत का एक दिन एक हजार बरस के बराबर होगा । इस हिसाब से एक हुकब की मिकदार दो करोड़ 88 लाख बरस हुई ।

अब जकरिया साहब ने ये नहीं बताया कि जिस सहीह हदीस मे ये जिक्र है कि खुद हुजूरे अकरम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम और दिगर साहाबा किराम रजि0 की नमाजे क़ज़ा हो गई और उन्होने उन नमाजों को बाद मे अदा किया उन्हे जकरिया साहब किस हुक्म मे रख रहे है ।

हिकायाते सहाबा मे सहाबा रजि0 की इज्जतों से खिलवाड़

हज़रत हंज़ला रजि0 को अपने मुताल्लिक निफाक का डर

हज़रत हज़ंला रजि0 कहते हैं कि एक मर्तबा हम लोग हुजूर सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम की मजलिस मे थे । हूजूरे अकदस सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने वाज फरमाया जिस से कुलूब नर्म हो गए और आंखों से आंसू बहने लगे और अपनी हकीकत हमे जाहिर हो गई । हुजूर सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम की मजलिस से उठकर मैं घर आया, और बीवी–बच्चे पास आ गए और कुछ दुनिया का जिक्र तज्किरा शुरू हो गया और बच्चों के साथ हंसना–बोलना, बीवी के साथ मज़ाक शुरू हो गया और वह हालत जाती रही जो हुजूर सल्ल0 की मज्लिस में थी । दफअतन ख्याल आया कि मैं पहले से किस हाल में था, अब क्या हो गया मैंने अपने दिल में कहा कि तू तो मुनाफिक हो गया कि ज़ाहिर में हुजूरे अक्दस सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम के सामने तो वह हाल था और अब घर मे आकर यह हालत हो गई । मैं इस पर अफसोस और रंज करता हुआ और यह कहता हुआ घर से निकला कि हंज़ला तो मुनाफिक हो गया । सामने से हज़रत अबूबक्र सिद्दीक रजि0 तशरीक ला रहे थे । मैंने उनसे अर्ज किया कि हंज़ला तो मुनाफिक हो गया । वह यह सुनकर फरमाने

लगे कि सुब्हानल्लाह क्या कह रहे हो हरगिज नहीं । मैंने सूरत बयान की कि हम लोग जब हुजूर सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम की खिदमत में होते है तो हम लोग ऐसे हो जाते हैं गोया वे दोनो हमारे सामने है और जब हुजूर सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम के पास से आ जाते है, तो बीवी–बच्चो, जायदाद वगैरह के धंधो में फंस कर उसको भूल जाते है । हजरत अबूबक्र सिद्दीक रजि0 ने फरमाया कि यह बात तो हम को भी पेश आती है, इसलिये दोनो हुजूर सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम की खिदमत मे हाजिर हुए और जा कर हंजला रजि0 ने अर्ज किया या रसूलल्लाह मै तो मुनाफिक हो गया । हुजूर सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फरमाया क्या बात हुई हंज़ला रजि0 ने अर्ज किया कि जब हम लोग आपकी खिदमत मे हाजिर होते है और आप जन्नत दोजख का जिक्र फरमाते है तब तो हम ऐसे हो जाते हैं कि गोया वे हमारे सामने है, लेकिन जब खिदमते अक्दस से चले जाते है तो जाकर बीवी–बच्चो और धर–बाहर के धंधो मे लग कर भूल जाते है । हुजूर सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फरमाया कि उस जात की कसम जिसके कब्जे मे मेरी जान है अगर तुम्हारा हर वक्त वही हाल रहे जैसा मेरे सामने होता है, तो फरिश्ते तुम्हारे से बिस्तरों पर और रास्तों मे मुसाफा करने लगे लेकिन हंजला यह बात है कि गाहे–गाहे–गाहे'गाहे ।(फजाइले आमाल, हिकायाते सहाबा, बाब 2, पेज 50 हिन्दी, किस्सा 11)

हजरत हंजला रजि0 की शहादत

गज्वा–ए–उहूद मे हजरत हंजला अव्वल से शरीक नहीं थे । कहते हैं कि उनकी नई शादी हुई थी, बीवी से हम–बिस्तर हुए थे । उसके बाद गुस्ल की तैयारी कर रहे थे और गुस्ल करने के लिए बैठ भी गये, सर को धो रहे थे कि एकदम मुसलमानो कें के शिकस्त की आवाज कान मे पड़ी, जिसकी ताब न ला सके । उसी हालत मे तलवार हाथ मे ले ली और लड़ाई के मैदान की तरफ बढ़े चले गए और कुफ्फार पर हमला किया और बराबर बढ़ते चले गए कि उसी हालत मे शहीद हो गए । चूंकि शहीद को अगर जुनुबी न हो तो बगैर गुस्ल दिए दफन किया जाता है इसलिए उन को भी उसी तरह कर दिया । मगर हुजूरे अक्दस सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने देखा, मलायका उन्हे गुस्ल दे रहे है, हुजूर सल्लाल्लाहू अलैहि ने सहाबा से मलाइका गुस्ल देने का तज्किरा फर्माया । (फजाइल आमाल, हिकायाते सहाबा, बाब 7 पेज 109 हिन्दी, किस्सा 3)

अब आप इन दोनो किस्सो मे गौर करे पहले किस्से मे हजऱत हंजला ने अपने आपको मुनाफिक इसलिए कहा कि वो अपने बीवी बच्चो के साथ मशगूल हो गये थे और आखिरत को भूल गये थे थोड़ी देर के लिए । मगर दुसरे किस्से मे वो उहूद की लड़ाई मे नहीं गये क्योकि उनकी नई शादी हुई थी, और उन्होने बीवी से हमबिस्तरी की थी और उसी हालत मे शहीद हो गये । अगर वो उहूद मे शहीद हो गये तो पहले किस्से मे उनके बीवी बच्चे कहां से आ गये, और मान लिजीये की पहले से बीवी बच्चे थे तो फिर नई शादी मे इतनी नफसानी ख्वाहिश की उहूद जैसे मुआरके मे पहले से ना जा सके, जो किसी भी सहाबा रजि0 से तसव्वुर नहीं किया जा सकता । अब बताईय इतनी लापरवाही से सहाबा के इज्जतो के साथ खिलवाड़ की फिक्र करें ।

एक मुहाजिर और एक अंसारी की चौकीदारी और मुहाजिर का नमाज़ मे तीर खाना

नबी अकरम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम एक गज्वे से वापस तश्रीफ ला रहे थे, शब को एक जगह कियाम फर्माया और इर्शाद फर्माया कि आज शब को हिफाजत चौकीदारी कौन करेगा । एक मुहाजिर और एक अंसारी हज़रत अम्मार बिन यारि रजि0 और हजरत उबाद बिन बिश्र रजि0 ने अर्ज किया कि हम दोनो करेंगे । हुजूर सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम ने एक पहाड़ी जहां से दुश्मन के आने का रास्ता हो सकता था, बता दी कि इस पर दोनो कियाम करो । दोनो हजरात वहां पर तशरीफ ले गए । वहां जाकर अंसारी ने मुहाजिर से कहा कि रात को दो हिस्सों पर मुंकसिम कर के एक हिस्से मे आप सो रहें, मैं जागता रहूं । दूसरे हिस्से मे आप जागें मैं सोता रहूं कि दोनो के तमाम रात जागने में यह भी एहतमाल है कि किसी वक्त नींद का गलीबा जो जाये और दोनो की आंख लग जायें । अगर कोई खतरा जागने वाले को महसूस हो तो अपने साथी को जगा ले । रात का पहला आधा अंसारी के जागने का करार पाया और मुहाजिर सो गये । अंसारी ने नमाज की नीयत बांध ली । दुश्मन की जानिब से एक शख्स आया और दूर से खड़े हुए शख्स को देखकर कर तीर मारा और जब कोई हरकत न हुई तो दूसरा और फिर इसी तरह तीसरा तीर मारा और हर तीर उन के बदन मे घुसता रहा और यह हाथ से उस को बदन से निकाल कर फेंकते रहें । इस के बाद इत्मीनान से रूकूअ किया, सज्दा किया, नमाज पूरी कर के अपने साथी को जगाया, वह तो एक की जगह दो को देख कर भगा गया कि न मालूम कितने हो, मगर साथी ने जब उठ कर देखा तो अंसारी के बदन से तीन जगह से खून ही खून बह रहा था । मुहाजिरीन ने फर्माया सुब्हानल्लाह । तुमने मुझे शुरू ही मे न जगा लिया । अंसारी ने फमार्याया कि मैंने एक सूर (सूर कहफ) शुरू कर रखी थी, मेरा दिल न चाहा कि उस को खत्म करने से पहले रूकूअ करूं । अब भी मुझे इस का अंदेशा हुआ कि ऐसा न हो, मैं बार बार तीर लगने से मर जाऊं और हुजूर सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम ने जो हिफाजत की खिदमत सुपुर्द कर रखी है, वह फौत हो जाये । अगर मुझे यह अंदेशा न होता, तो मैं मर जाता, मगर सूर खत्म करने के पहले रूकूअ न करता । (फजाइल आमाल, हिकायाते सहाबा, बाब पांच, किस्सा 5, पेज 84 हिन्दी,)

अब यहां पर फायदा मे लिखते है कि एक फिकही इख्तिलाफी मसअला भी है कि खून निकलने से इमाम आजम रह0 के नजदीक वुजू टूट जाता है, इमाम शाफाई के नजदीक नहीं टूटता, मुमकीन है इन सहाबा का मज़हब भी यही रहा हों । बड़ें अफसोस की बात है कि जिस सहाबा का मजहब ये शाफाई बता रहे है वो इमाम शाफाई 150 हिजरी मे पैदा हुए थे, और ये सहाबा रजि0 7 या 8 हिजरी मे शहीद हो गये यानि वो अपने से तकरीबन 142 बरस बाद पैदा होने वाले इमाम शाफाई के मुकल्लिद थे, और क्या सहाबा तकलीद जैसी लानत मे गिरफ्तार थे, नाऊजुब्बिलाह ।

फजाइल आमाल का एक और अकीदा खिज्र अलैहिस्सलाम जिन्दा है और आज भी हैं।

(1) एक बुजुर्ग खिज्र अलैहिस्सलाम से अपनी मुलाकात का बहुत तवील किस्सा नकल करते हैं आखिर मे हजरत खिज्र अलैहिस्सलाम ने फरमाया मै सुबह की नमाज मक्का मुकर्रमा में पढ़ता हूं और जोहर की नमाज मदीना तय्यबा में पढ़ता हूं और असर की नमाज बेतुल मुकद्दिस में और मगरिब की तूरे सिना पर और ईशा की सिकन्दरी पर। (फजाइल हज्ज, किस्सा 62, सफा 279)

(2) एक बुजुर्ग फरमाते है कि मुझ पर एक मर्तबा कबज (दिल तंगी) और खौफ का शदीद गलबा हुआ। मैं परेशान हाल होकर बगैर सवारी और तोशा के मक्का मुर्करमा चल दिया। तीन दिन तक इसी तरह बगैर खोय पीये चलता रहा। चौथे दिन मुझे ख्वाब की शिद्दत से अपनी हलाकत का अन्देशा हो गया और जंगल में कही सायादार दरख्त का भी पता न था कि इसके साये में बैठ जाता। मैंने अपने आपको अल्लाह के सुपुर्द कर दिया और किबले की तरफ मूंह करके बैठ गया और मुझे नींद सी आ गई। तो मैंने ख्वाब मे एक शख्स को देखा कि मेरी तरु हाथ बढ़ा कर फरमाया लाओं हाथ बढ़ाओं। मैंने हाथ बढ़ाया उन्होने मुझसे मुसाफा किया और फरमाया तुम्हे खुशखबरी देता हूं कि तुम सही सालिम हज्ज भी करोगे और कबर अतहर की जियारत भी करोगें। मैंने कहा अल्लाह आप पर रहम करें, आप कौंन है फरमाया मैं खिज्र हूं। मैंने अर्ज किया कि मेरे लिए दुआ कीजिए फरमाया यह अलफाज तीन मरतबा कहो (पूरा वाक्तया आप पढ़ ले)। (फजाइल हज्ज, किस्सा 61, सफा 277)

कुरआन व हदीस का फैसला हज़रत खिज्र अलैहिस्सलाम के लिए

खिज्र अलैहिस्सलाम अल्लाह के बंदे थे और कई एक मुहद्दिसीन ने बा दलाइल साबित किया है कि वो अल्लाह के नबी थे। इमाम कर्तबी रह0 ने कहा – वो जम्हूर के नज़दीक नबी थे। इस बात की शहादत कुर्आनी आयात देती हैं, इसीलिये भी कि नबी अपने से कम मुकाम वाले से इल्म नहीं सीखता और बातिन के हुक्म पर अंबिया ही को इत्तिला दी जाती है, अल्लाह तआला ने किसी के लिए भी हमेशगी नहीं रखी हर एक ने मौत का जाम पीना है और खिज्र अलैहिस्सलाम की मौत पर इमाम बुखारी, इब्राहिम अल हरबी, अबू जाफर इब्ने अल मुनादी, अबू यअला बिन अल फर्राअ, अबू ताहिर इबादी और अबू बक्र इब्ने अरबी रह0 वगैरह मुहद्दिसीन ने कतई हुक्म सादिर किया है उनकी दलील रसूलूल्लाह सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम का फरमान है :–

पहली हदीस :–अब्दुल्लाह बिन उमर रजि0 फरमाते है कि रसूलुल्लाह सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम ने अपनी अंतिम उम्र में हमे ईशा की नमाज पढ़ाई, जब सलाम फेरा तो खड़े हो गये और फरमाया तुम इस रात की अहमियत जानते हो। आज की रात से सौ साल बाद कोई शख्स जो अब इस जमीन पर मौजूद है जिन्दा

नहीं रहेगा। (सहीह बुखारी, इल्म का बयान, हदीस नं0 116)

इस हदीस में उस वक्त जमीन पर चलने फिरने वालो लोगो को अल्लाह के रसुल की तरफ से पेशनगोई थी कि उनमे से 100 साल बाद कोई जमीन पर बाकी न रहेगा। और अलहुमदिल्लाह इस बात के ठीक 100 साल बाद यानि 110 हिजरी मे आखरी साहबी अबू तुफैल आमिर बिन वासिला रजि0 दुनिया से तशरीफ ले गये। ये हदीस इस बात पर दलालत करती है कि जो भी उस वक्त जमीन के किसी भी हिस्से मे रह रहा होगा वह 110 हिजरी तक इन्तेकाल कर चुका होगा।

दुसरी हदीस :- हजरत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजि0 से रिवायत है कि अल्लाह ने जो भी नबी भेजा उससे वादा लिया कि अगर उसकी जिन्दगी मे मुहम्मद सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम मबऊस किये गए तो वो उन पर जरूर ईमान लाये और उनकी जरूर मदद करें।

किसी भी सहीह खबर में मौजूद नहीं कि खिज्र अलैहिस्सलाम नबी करीम सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम के पास तशरीफ लाये हो और न ये ही साबित है कि उन्होन आपके साथ मिलकर किताल किया हो और आपने बद्र वाले दिन फर्माया :-

तीसरी हदीस :- ऐ अल्लाह – अगर ये गिरोह हलाक कर दिया गया तो तेरी जमीन मे इबादत नहीं की जाएगी। (फतहुलबारी)

अगर खिज्र अलैहिस्सलाम मौजूद होते तो ये बात सहीह नही हुई क्योकि वो तो जरूर अल्लाह की इबादत करते।

लिहाजा खिज्र अलैहिस्सलाम फौत हो चुके है यही बात दलाइल की रु से कवी और मजबूत है। (वल्लाहू आलम)

तो मेहरबान साथियो देखा आपने फजाइल आमाल की हकीकत जो आपको आपके प्यारे रसूल सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम के फरमान, हुक्म से कितना दूर कर देगी, क्यो नहीं आप सिर्फ सहीह अहादीस और कुरआन पर जमा हो जाते। आप देखियेगा जब आप अपना वो अमल जो अल्लाह के रसुल सल्लाल्लाहू अलैहि वसल्लम से साबित नहीं है उसे छोड़ते है तो आपको कितनी खुशी महसूस होगी ये बयान करना मुश्किल है।

इस्लामिक दावाअ सेन्टर

रायपुर छत्तीसगढ़